अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : दसवीं - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) अवसर्पिणी काल के तीसरे आरे में एक समय में उत्कृष्ट सिद्ध होते हैं-

(क) 4 (ख) 20

(ग) 10 (घ) 108 ( )

(b) एक समय में प्रत्येक बुद्ध सिद्ध होते हैं-

(क) 20 (ख) 10

(ग) 108 (घ) 40 ( )

(c) सिद्ध होने का उत्कृष्ट विरह है-

(क) 1 समय (ख) अन्तर्मुहूर्त्त

(ग) 6 मास (घ) पल्योपम के असंख्यात भाग ( )

(d) अधोलोक में विजय है-

(क) सलिलावती (ख) वप्रा

(ग) दोनों (घ) दोनों ही नहीं ( )

(e) वर्षधर पर्वत में से उत्कृष्ट सिद्ध होते हैं-

(क) 1 (ख) 2

(ग) 4 (घ) 10 ( )

(f) भाषा की उत्पत्ति नहीं होती है-

(क) कार्मण शरीर से (ख) औदारिक शरीर से

(ग) वैक्रिय शरीर से (घ) आहारक शरीर से ( )

(g) जो भाषा गंभीर शब्द अर्थ वाली होने से स्पष्ट न हो-

(क) संशयकरणी (ख) अभिगृहीता

(ग) प्रज्ञापनी (घ) अव्याकृता ( )

(h) एक बेंत में अंगुल होते हैं-

(क) 6 अंगुल (ख) 12 अंगुल

(ग) 24 अंगुल (घ) 96 अंगुल ( )

(i) क्षुल्लक भव होता है-

(क) 256 आवलिका (ख) एक मुहूर्त्त

(ग) 6 आवलिका (घ) 4 मिनट ( )

(j) सित्तर लाख छप्पन हजार करोड़ वर्षों का होता है-

(क) एक अवसर्पिणी काल (ख) एक पूर्व

(ग) एक पल्योपम (घ) 33 सागरोपम ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) भाव से स्वलिंगी, अन्यलिंगी और गृहस्थलिंगी सिद्ध होते हैं। ( )

(b) ऊर्ध्वलोक में निरन्तर चार समय तक सिद्ध हो सकते हैं। ( )

(c) भाषा का संस्थान वज्र के आकार का है। ( )

(d) सम्बन्ध की अपेक्षा से जो सत्य है, वह भाव सत्य है। ( )

(e) कोंकण देश में पानी को 'पिच्च' कहते हैं। ( )

(f) कार्मण पुद्गल परावर्तन से तैजस पुद्गल परावर्तन का निष्पत्ति काल अनन्त गुण है। ( )

(g) सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्तन पंच संग्रह भाग-2 के आधार से बताया है। ( )

(h) पूर्व पश्चिम महाविदेह क्षेत्र के मनुष्यों के आठ बालाग्र एक लीख के बराबर होते हैं। ( )

(i) काय स्थिति के थोकड़े का वर्णन अव्यवहार राशि के जीवों की अपेक्षा से समझना चाहिए। ( )

(j) चतुरिन्द्रिय जीवों की भव स्थिति उत्कृष्ट 12 वर्ष की होती है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	संख्यात आवलिका	(क) एक मुहूर्त्त	.....
(b)	पाँच संवत्सर	(ख) एक मास	.....
(c)	दो पक्ष	(ग) एक शीत सेणिया	.....
(d)	84 लाख वर्ष	(घ) एक युका	.....
(e)	77 लव	(च) एक श्वांस	.....
(f)	आठ उष्ण सेणिया	(छ) एक बादर परमाणु	.....
(g)	आठ लीख	(ज) एक पूर्वांग	.....
(h)	दो हजार धनुष	(झ) 96 अंगुल	.....
(i)	अनन्ता सूक्ष्म परमाणु	(य) एक युग	.....
(j)	चार कुक्षि	(र) एक कोस	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मैं प्रासुक भोजन करने वाला निर्ग्रन्थ हूँ। .....

(b) मैं भूतकाल में था, वर्तमान काल में हूँ और भविष्य काल में रहूँगा। .....

(c) मैं प्रकट स्पष्ट अर्थ वाली भाषा हूँ। .....

(d) मेरी उत्कृष्ट काय स्थिति दो समय की है। .....

(e) मैं नियमा अपर्याप्त अवस्था में काल करता हूँ। .....

(f) मैं भाषा योग्य पुद्गलों को ग्रहण करके छोड़ता हूँ। .....

(g) मेरी उत्कृष्ट कायस्थिति अढ़ाई पुद्गल परावर्तन काल है। .....

(h) मेरी जघन्य काय स्थिति 2 समय कम 256 आवलिका है। .....

(i) मुझमें रहे सभी भव्य जीव मोक्ष में जाते हैं। .....

(j) मेरा अर्थ प्रथम बार सम्यक्त्व प्राप्ति होना है। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट अवगाहना वाले निरन्तर कितने समय तक सिद्ध हो सकते हैं ?

.....

.....

.....

(b) स्वलिंगी, अन्यलिंगी और गृहीलिंगी के सिद्ध होने का उत्कृष्ट अन्तर लिखिए।

.....

.....

.....

(c) चार तरह की उपमा लिखिए।

.....

.....

.....

(d) आख्यायिका निःसृत असत्य किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(e) चारों भाषाओं की अल्पबहुत्व लिखिए।

.....

.....

.....

(f) उत्करिका भेद को समझाइए।

.....

.....

.....

(g) औदारिक पुद्‌गल परावर्तन किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(h) सूक्ष्म द्रव्य पुद्‌गल परावर्तन किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(i) पुरुषवेद की कायस्थिति और अन्तर लिखिए।

.....

.....

.....

(j) बादर तैजस्‌काय की काय स्थिति और अन्तर लिखिए।

.....

.....

.....

(k) छद्‌मस्थ और केवली के उपयोग में क्या अन्तर है ?

.....

.....

.....

(l) काय परीत व काय अपरीत का अन्तर लिखिए।

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्ति में लिखिए (कोई बारह): - 12x3=(36)

(a) मड़ाई अणगार को विज्ञ और वेद क्यों कहा गया है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(b) गति के आधार पर सिद्धों की अल्पबहुत्व लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) भवनपति से वैमानिक तक के देवों से निकलकर किस-किस प्रमाण में सिद्ध हो सकते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

(d) पूर्वभाव नय की अपेक्षा सिद्धों का क्षेत्र लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) भाषा का अवसान कहाँ तक होता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(f) स्थापना सत्य को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(g) सम्मत सत्य को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

(h) पल्योपम को समझाने (ठसाठस भरने) की पाँच उपमाएँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) सूक्ष्म काल को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

(j) सूक्ष्म और साधारण वनस्पति के चार भेदों की अलग-अलग तथा सम्मिलित काय स्थिति लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(k) प्रथम तीन लेश्याओं की काय स्थिति लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(l) दर्शन के चार भेदों की कायस्थिति व अन्तर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(m) कायस्थिति का भाषक पद लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....